International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 553-555

स्वच्छ भारत अभियान : बिलासपुर शहर के लोगों की अवधारणा और सहयोग व्यवहार पर एक अध्ययन

डॉ. राहुल शर्मा[1], संगीता पाटनवार[2]

[1] सहायक प्राध्यापक प्रबंधन एवं वाणिज्य विभाग, (शिक्षा शास्त्र), डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

[2] एम.फिल. (वाणिज्य), प्रबंधन एवं वाणिज्य विभाग, (शिक्षा शास्त्र), डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

प्रस्तावना

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने इस अभियान को शुरू किया है जो प्रशंसनीय है। जगह–जगह हमें स्वच्छ भारत के पोस्टर गाँधीजी के चित्र के साथ दिखाई देते हैं। क्या गाँधीजी का विचार यहीं तक सीमित था? एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है– और उत्तम स्वास्थ्य सफाई के बगैर सम्भव नहीं। मेरे विचार में गाँधीजी का स्वच्छता का विचार "स्वच्छ भारत" के वर्तमान विचार से उच्चतर है। इस पर चिन्तन करने की जरूरत है।

यदि हम गाँधीजी की स्वच्छता की विचारधारा पर चिन्तन करें तो यह परिणाम सामने आता है कि गाँधीजी की स्वच्छता की विचारधारा हार्दिक स्वच्छता की विचारधारा थी। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि हमारा हृदय, हमारी सोच धोखाधड़ी, कपट, नफरत से पाक रहे। इससे दूसरों पर इसका प्रभाव पड़ेगा। इस तरह पूरा समाज स्वच्छ हो जाएगा। इस तरह सामूहिक रूप से आन्तरिक स्वच्छता का परिवेश बनेगा जो पूरी सृष्टि पर छा जाएगा। इस तरह पूरे विश्व से युद्ध, हिंसा, नफरत, छुआछूत शोषण, असमानता जैसी कुरीतियाँ समाप्त हो जाएँगी। जीवन के सभी क्षेत्र पवित्र हो जाएँगे चाहे वह पर्यावरण हो, अर्थव्यवस्था हो, राजनीति हो या समाज। अर्थात जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारा अन्तःकरण, हमारी सोच, हमारा दृष्टिकोण हर तरह की गन्दगी से शुद्ध रहें।

भारत में लोगों की स्वच्छता अभियान में अपने सोचने का अलग–अलग तरीका है। जो लोगों में यह अवधारणा है कि घर अपना साफ–सफाई रहे। बाहर की गंदगी में और गंदगी फैलाते जाते हैं। कचरों के ढेर पर और कचरें डालते जाते है। अपने आस–पास के गली मोहल्लों में कोई देख कर भी साफ–सफाई नहीं करता है। यहॉ लोग यह सोचते है कि सफाई कर्मचारी आ कर करेंगे। हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। सभी खाने योग्य सामाग्री को अपने घर लाकर प्लास्टिक की थैलियों को बाहर फेक देते है। लोगों में गंदगी फैलाने का एक अलग ही जुनुन है। जो और साफ–सुथरी जगहों पर, पार्क पर, चौक–चौराहों पर गार्डन में गंदगी फैलाते रहते हैं।

स्वच्छता

एक सामाजिक मूल्य आज भारत सहित विश्व के कई देश साफ–सफाई के संकट से जूझ रहे हैं। स्वच्छता के अभाव से कई तरह की समस्याएँ और बीमारियाँ भी उत्पन्न हो रही हैं। स्वच्छता के लिए भारत सहित तमाम देशों के द्वारा व्यापक प्रयास किये गए हैं, इसके बावजूद आज भी वैश्विक आबादी में से करीब 40 प्रतिशत लोग साफ–सफाई के संकट से जूझ रहे है (ीजजचःध्ध्ूीव.पदजध्द। इस स्थिति में हमारे समाज की बहुत बड़ी भूमिका है और आगे भी हो सकती है क्योंकि सफाई के प्रति समाज में जागरूकता में कमी की ही वह वजह है जिसके कारण विश्व की इतनी अधिक आबादी इस संकट में जी रही है। सफाई एक सीखा हुआ व्यवहार है और प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन मे हमेशा सीखा हुआ व्यवहार ही करता है।

स्वच्छ भारत आंदोलन

भारत को स्वच्छ बनाने के लक्ष्य के साथ नई दिल्ली के राजघाट पर 2 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा इस अभियान की शुरुआत हुई। इसका लक्ष्य है 2 अक्दूबर 2019 तक हर परिवार को शौचालय सहित स्वच्छता–सुविधा उपलब्ध कराना है, ठोस और द्रव अपशिष्ट निपटान व्यवस्था, गाँव में सफाई और सुरक्षित तथा पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी उपलब्ध हो। ये भारत के राष्ट्रपिता को उनके 150वें जन्मदिवस पर सबसे उपयुक्त श्रद्धांजलि होगी। ये बहुत महत्वपूर्ण है कि इस अभियान को सफल बनाने के लिये प्रधानमंत्री स्वयं अग्रसक्रिय भूमिका निभा रहे हैय राजघाट पर उन्होंने खुद सड़कों को साफ कर इस मुहिम की शुरुआत की।

स्वच्छता के लिए अधिनियम

संविधान के 73 वें संशोधन अधिनियम, 1992 के अनुसार, स्वच्छता को 11 अनुसूची में शामिल किया गया है। तदनुसार, ग्राम पंचायतों की एस. बी. एम. (जी) के कार्यान्वयन में प्रधान भूमिका होती है। इस कार्यक्रम को सभी स्तरों पर पंचायती राज संस्थाओं द्वारा कार्यान्वित किया जा सकता है। उनकी सही भूमिका का निर्णय राज्यों द्वारा, राज्य में आवश्यकता के अनुसार, लिया जा सकता है।

शोध का चयन

सफाई को लेकर लोगों में जागरुकता आई है। सफाई अभियानों के निरंतर आयोजनों के साथ–साथ देश भर में नाटकों और संगीत के माध्यम से सफाई के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है। लेकिन बिलासपुर शहर में भी आज भी इस तरह लोगों के विचारों में परिवर्तन नहीं हुआ है। कई जगहों पर आज भी शहरवासीयों द्वारा कुड़े–करकट, कचरे के ढेर, गंदगी फैलाते रहते है। आज भी शहरवासीयों के मन में बदलाव की जरूरत है। शहर के लोगों को ज्यादा से ज्यादा उनके व्यवहार को बदल कर स्वच्छता के मुख्य उद्देश्य के बारे में जानकारी देना है। शहर के साफ–सफाई में लोगों की सहभागिता की आवश्यकता है। शहरों के विकास में स्वच्छता अभियान महत्वपूर्ण है। इस कारण शोधार्थी ने अपने शोध के लिए "स्वच्छ भारत अभियानः बिलासपुर शहर के लोगों की अवधारणा और सहयोग व्यवहार पर एक अध्ययन – विषय को चुना है।

शोध का महत्व

इस शोध के अनुसार देखा जाएगा तो व्यक्ति के सामाजिक और

आर्थिक स्थिति के आधार पर स्वच्छता का स्तर भी अलग–अलग होता है। प्रायः ऐसा माना जाता है कि जो लोग सामाजिक और आर्थिक आधार पर उच्च दर्जा प्राप्त है वे अधिक गन्दगी नहीं फैलाते, वहीं अभाव ग्रस्त और वंचित लोग गन्दगी फैलाने में अधिक योगदान देते है। शहरों में स्लम की बढ़ती संख्या और इससे उपजती कई तरह की बीमारियाँ इसका एक उदाहरण है। हालांकि यह सभी लोगों के साथ सही ही हो ऐसा जरुरी नहीं है। बिलासपुर शहर वासियों में भी शिक्षित होते हुए भी स्वच्छता को समझ पाना बहुत ही कम लोगों की सामाजिक स्तर पर भी स्वच्छता को लागू नहीं किया गया है। इस शोध से हमारे आने वाले पीढ़ी भी स्वच्छता के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते है, तथा अन्य शोधकार्ताओं को भी इससे मद्द मिल सकता है।

शोध का प्रभाव

इस शोध का प्रभाव किसी भी लोगों के जीवन के मूलभूत साधनों की प्राप्ति ही सही तरीके से नही कर पाते उनसे वास्तव में गन्दगी के कारकों को रोकने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। किन्तु स्वच्छता ऐसी चीज है जिसे करने के लिए आर्थिक मजबूती की आवश्यकता भी नहीं है। कोई भी व्यक्ति जो स्वच्छता के प्रति जागरूक है और जो इसे अपनाना चाहता है वह बिना किसी आर्थिक कठिनाई के स्वच्छ रह सकता है। शोध का प्रभाव अलग–अलग लोगों के व्यवहार एवं जागरूक होने पर निर्भर करता है। जिससे उनके मन में स्वच्छता के प्रति जागरूकता के साथ–साथ सहयोग की भी भावना पैदा होगा।

शोध के उद्देश्य

लोगों में व्यवहारिक बदलाव लाने के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता और स्वस्थ स्वच्छता के तरीकों के अभ्यास किया जा रहा है। इसका उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में आम जनता के रहने के लिए जागरूकता पैदा करना है और इसे सार्वजनिक स्वास्थ्य से जोड़ने के लिए बनाया गया है।

- बिलासपुर शहर के नागरिकों में स्वच्छता के प्रति अवधारणा का अध्ययन करना।
- बिलासपुर शहर के नागरिकों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- बिलासपुर शहर के नागरिकों में स्वच्छता के प्रति व्यवहार का अध्ययन करना।
- बिलासपुर शहर के नागरिकों में स्वच्छता के प्रति सहयोग का अध्ययन अध्ययन करना।

परिकल्पना

$H0_1$- स्वच्छता अभियान में लोगों के प्रति जागरूकता का आभाव है।

$H0_2$- स्वच्छता अभियान में लोगों के प्रति सहयोग की भावना कम है।

संभावित सीमॉए

- समय :– इस शोध के लिए केवल एम.फिल. हेतु एक वर्ष तक सीमित जाएगा।
- क्षेत्र :– यह शोध कार्य केवल बिलासपुर शहर तक सीमित किया जाएगा।
- इस शोध में साक्षात्कार द्वारा प्राप्त आंकड़ों में त्रुटि हो सकता है।

बिलासपुर जिले का संक्षिप्त परिचय

बिलासपुर जिला छत्तीसगढ़ राज्य का हृदय स्थल के नाम से जाना जाता है। इसका मुख्यालय बिलासपुर है जो राज्य की राजधानी नया रायपुर से 133 किलोमीटर उत्तर में स्थित है तथा प्रशासनिक दृष्टि से राज्य का दूसरा सबसे प्रमुख शहर है। छत्तीसगढ़ राज्य का उच्च न्यायालय भी इसी शहर में स्थित है अतः इसे "न्यायधानी" होने का भी गौरव प्राप्त है। बिलासपुर सुगंधित दूबराज चावल की किस्म के लिए भी प्रसिद्ध है। इसके अलावा यहाँ हथकरघा उद्योग से निर्मित कोसे की साड़ियाँ भी देशभर में विख्यात है।

बिलासपुर जिले का गठन 1869 में हुआ तथा बिलासपुर नगर निगम 1867 में अस्तित्व मैं आया। 1901 में बिलासपुर की जनसंख्या 18,937 थी जो कि ब्रिटिश राज के केंद्रीय सूबे में आठवीं सबसे बड़ी थी। बिलासपुर 22.23 अंश उत्तर तथा 82.08 अंश में स्थित है।

बिलासपुर शहर में स्वच्छता की स्थिति

बिलासपुर शहर में स्वच्छता की स्थिति अत्यंत दैनिय है। जिसके लिए प्रशासन एवं लोगों को भारी समस्या का समाना करना पड़ता है। निगम द्वारा शहर की स्वच्छता को बनाये रखने के लिए शहरवासियों के साथ–साथ निगम कर्मियों का भी योगदान महत्वपूर्ण है। शहर की स्वच्छता व सुंदरता बनाए रखने के लिए सभी वर्गों का सहयोग अपेक्षित रहता है, इसके लिए संयुक्त प्रयासों की नितांत आवश्यकता है।

शोध प्रविधि

सामाजिक अनुसंधान जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, सामाजिक जीवन और घटनाओं को जानने का प्रयास है। संसार अनेक रहस्यों से भरा पड़ा है। मानव जिज्ञासु प्राणी है, जो इन रहस्यों का उद्घाटन करना चाहता है। सामाजिक जीवन और घटनाओं को उद्घाटित करना ही सामाजिक अनुसंधान की मूल आत्मा है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में बिलासपुर शहर परिक्षेत्र के व्यक्तियों को जनसंख्या के रूप मे लिया गया है। जिससे शहर के स्वच्छता के प्रति अवधारणा एवं जागरूकता को ज्ञात करना है।

निर्दशन प्रणाली

शोध के लिए मिश्रित न्यादर्श चयन का प्रयोग किया गया है। इस पद्वति द्वारा 100 बिलासपुर शहर के नागरिकों का चयन किया गया है। जिसमें 50 महिला एवं 50 पुरूषों को लिया गया है।

आंकड़ों का संकलन

आंकड़ों के संकलन के लिए दोनों प्रकार पर निर्भर होकर शोध कार्य किये जाते हैं जो निम्न है–

a. प्राथमिक समंक :–प्राथमिक समंक किसी शोध के लिए आधार सामग्री होते है। इसी के द्वारा ही कोई शोधकार्य अपने अगल प्रयास की ओर बढ़ता हैं इस साम्रगियों का शोध विषय से सीधा संबंध होता है। अपने शोध विषय से संबंध समस्याओं के समाधान हेतु शोधार्थी विभिन्न स्त्रोतों संसाधनों, उद्यमों से सामग्री एकत्रित करते है। प्राथमिक आंकड़ो का संकलन 50 महिला एवं 50 पुरूषों को से प्रश्नावली के द्वारा प्रत्यक्ष साक्षात्कार के माध्यम से प्रश्नावली करके सामग्री एकत्र किया गया है।
b. द्वितीयक समंक :– लक्षित विषय प्रसंग के बारे में पहले से ही

उपलब्ध अथवा संकलित सामग्री को द्वितीयक सामग्री कहते है। इस शोध कार्य में द्वितीयक संमकों के संकलन हेतु संदर्भ सूचि, पुस्तकें समाचार पत्र, पत्र–पत्रिकाएं, विभिन्न लेख, शोघ पत्र तथा इंटरनेट का प्रयोग किया गया है।

शोध का परिणाम

- शोध में पाया कि 20 से 25 आयु वर्ग के उत्तरदाओं की संख्या सबसे ज्यादा 70 प्रतिशत थी। इस शोध के अंतर्गत शामिल सभी उत्तदाताओं को स्वच्छ भारत अभियान के बारे में जानकारी थी।
- सूचना के माध्मम के रूप में सबसे सशक्त माध्यम टेलिविजन को पाया गया। समाचार पत्र को दूसरा एवं फेसबुक को 14.6 प्रतिशत के साथ तीसरा स्थान मिला। फेसबुक को वाट्सएप से 50 प्रतिशत अधिक सशक्त माध्यम पाया गया है। बेनर एवं अधिकारियों के माध्यम से लोगों में कम जानकारी प्राप्त हुए।
- अभियान के प्रचार–प्रसार में प्रयुक्त विज्ञापन, स्लोगन, स्पीच, स्वच्छता शपथ, स्पेशल प्रोग्राम, डॉक्यूमेंटी व अन्य हेतु प्रयुक्त माध्यमों में सबसे सशक्त माध्यम टेलीविजन को पाया गया, वही दूसरे स्थान पर न्यू मीडिया, तीसरे स्थान पर प्रिंट मीडिया एवं अंतिम स्थान में अन्य है।
- सर्वेक्षण में यह पाया गया कि अभियान से प्रभावित होकर आधे से ज्यादा युवा सफाई के लिए सप्ताह में दो घंटे तक का समय निकालते हैं, जबकि सफाई को बिल्कुल समय न देने वाले युवाओं का स्थान तीसरा रहा जो कि समग्र का 12 प्रतिशत है। सप्ताह में 2 से 4घंटे सफाई को समय देने वाले युवाओं का स्थान दूसरा रहा।
- अभियान से जुड़ी सरकारी वेबसाइट के बारे में लगभग 95 प्रतिशत युवाओं को जानकारी नहीं थी। केवल 5 प्रतिशत युवा ही वेबसाइट के बारे में जानते थे।
- शोध से यह पाया कि अभियान के प्रभाव से अब युवाओं में कूड़ा खुले में इधर उधर न फेकने के प्रति जागरूकता आयी है। लगभग 80 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि वे इस अभियान के चलते सफाई रखने के प्रति प्रेरित हुए है।

परिकल्पनाओं का निष्कर्ष

$H0_1$- स्वच्छता अभियान में लोगों के प्रति जागरूकता का आभाव है।

परिकल्पना के अनुसार लोगों को बहुत सीमा तक स्वच्छता अभियान के बारे में जानकारी है जिससे जागरूक होकर शहरवासियों ने अपने मोहल्ले को साफ–सफाई रखते है। कचड़े को कुड़ादान में डालते है। जिससे गंदगी कम होती है। अतः परिकल्पना – 1 से स्वच्छता अभियान में लोगों के प्रति जागरूकता का आभाव नहीं है।

$H0_2$- स्वच्छता अभियान में लोगों के प्रति सहयोग की भावना कम है।

परिकल्पना के अनुसार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'स्वच्छता अभियान' के तहत् युवाओं में रूचियां बढ़ती जा रही है। जिससे इस अभियान से प्रभावित होकर आधे से ज्यादा युवा सफाई के लिए सप्ताह में दो घंटे तक का समय निकालते हैं, जिससे सफाई के प्रति नागरिकों की अवधारणा बदल रही है। घर से लेकर मोहल्ले तक, प्राथमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक, गांव से लेकर देश तक सभी जगहों में स्वच्छता अभियान के प्रति लोगों में जागरूकता लाने का कार्य कर रहें है। अतः परिकल्पना – 2 से स्वच्छता अभियान में लोगों के प्रति सहयोग की भावना बढ़ रही है।

उपसंहार

स्वच्छता अभियान में बिलासपुर शहर के लोगों की मानसिकता में परिर्वतन हो रहा है। लोगों को यह पता है कि स्वच्छता हमारे लिए लाभाकारी है। स्वच्छ बनाये रखने से हमारे स्वास्थ्य में अच्छा प्रभाव पड़ेगा। स्वच्छ रहने से लोगों को बिमारियों से दूर रखेंगे। निरोगी रहेगा, स्वच्छ पर्यावरण मिलेगा। बड़ी–बड़ी बिमारियॉ लोगों से दूर भागेगी। स्वच्छता अभियान का मुख्य उद्देश्य लोगों को जागरूक करना एवं स्वच्छता अभियान में खुल कर पूरी तरह से सहयोग करने की भावना पैदा हुआ है।

संदर्भ

1. डा0 मोहम्मद इसरार खाँ, राजपाल (2016) ''स्वच्छ भारत अभियान का विकास खण्ड स्तरीय आलोचनात्मक विश्लेषण (विकास खण्ड बहेड़ी जनपद बरेली उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में) International Journal of Academic Research and Development ISSN: 2455-4197, Page No, 61-68.
2. धरवेष कठेरिया, निरंजन कुमार , प्रणव मिश्र, (2016) पर्यावरण संरक्षणः स्वच्छ भारत अभियान (एक कदम स्वच्छता की ओरः वाराणसी के विशेष संदर्भ में) ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.8014(UIF), 6.
3. चंदने, विलास, (2008) प्रकृति और मानव, दिल्लीः संदर्भ प्रकाशन, 81–88854–35–2।
4. गुप्ता बंदना, (2009) नगर निगम की प्रबंधकीय व्यवस्था, वाराणसी, एक अध्ययन, पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग, ISBN 81–7769–7730।
5. राउत, ताज, (2007) पर्यावरण, पर्यटन, एवं लोक संस्कृति, न्यू अकेडमिक पब्लिशर्स।
6. सिंह डॉ अशोक कुमार,(2005) उत्तरप्रदेश के प्राचीनतम नगर, द्वितीय संस्करण, वाणी प्रकाशन, ISBN 81–8143–277–0।
7. अस्थाना, डॉ. मधु, (2008) पर्यावरणः एक संक्षिप्त अध्ययन, मोतीलाल बनारसीदास।
8. पर्यावरण संरक्षण में गांधी की वैकल्पिक तकनीक, आरबीएसए पब्लिशर्स, 2008, 81–76113–69–7.
9. http://www.india.com/news/india/swachh-survekshan-2017-full-list-state-wise-rankings-of-cleanest-cities-in-india-2097116/
10. http://indianexpress.com/article/india/swachh-bharat-rankings-2017-here-are-the-top-100-cities-ranked-on-cleanliness-4640216/